पूर्वोत्तर परिषद् में उत्साह के साथ मनाया गया हिंदी पखवाड़ा

उत्तर पूर्वी परिषद् सचिवालय, शिलांग में हर वर्ष की भांति इस साल भी 18 सितंबर से 30 सितंबर की अवधि के दौरान हिंदी दिवस और हिन्दी पखवाड़ा गरिमामय माहौल में बेहद उत्साह एवं सुरूचिपूर्ण ढंग से आयोजित किए गए।

हिंदी दिवस समारोह के शुभारंभ अवसर पर आयोजित समारोह में निदेशक (मूल्यांकन तथा निरीक्षण) एवं कार्यकारी राजभाषा अधिकारी श्री एन.जी. यीरामाई ने बतौर मुख्य अतिथि अपने सम्बोधन में सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मियों से अपने रोज़मर्रा के जीवन में अधिक से अधिक हिन्दी भाषा के प्रयोग का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारे देश की राजभाषा है और इसे आमजन की भाषा बनाने के लिए सभी भेदभावों से ऊपर उठ कर हमें संयुक्त प्रयास करने चाहिए। उन्होंने हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता को इंगित करते हुए कहा कि आज इंटरनेट पर हिन्दी एक प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित हो रही है।

उन्होंने कहा कि हमारे देश की राजभाषा हिन्दी एकता, भावना और प्रेम की भाषा है। हिन्दी ने सभी जन आंदोलनों, विशेषकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भाषा किसी भी देश की विभिन्न परिस्थितियों जैसे धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा दार्शनिक परिस्थितियों को जानने का सशक्त माध्यम होती है। भारत में हिन्दी समस्त जनमानस की संवदेनाओं को प्रकट करने का सरल माध्यम है। देश में हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस के अवसर मनाया जाता है।

हिन्दी पखवाड़ा के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि अपने संबोधन में योजना सलाहकार के श्री सोम कामई ने हिंदी के महत्व एवं प्रसार पर प्रकाश डालते हुए सभी अधिक से अधिक बोलचाल तथा राजकीय कार्यो में हिंदी के प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने कहा कि भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर और पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने भावों को लिखित अथवा कथित रूप से दूसरों को समझा सकते हैं और दूसरों के भावों को समझ सकते हैं। सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को हम भाषा कहते हैं।

श्री सोम कामई ने हिन्दी दिवस के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रश्न उठता है कि हम हर साल 14 सितंबर को ही हिंदी दिवस क्यों मनाते हैं? उन्होंने बताया कि वास्तव में इसी दिन संविधान सभा ने वर्ष 1949 में हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाया था। आज़ादी के बाद हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के संबंध में तमाम तरह के विचार-विमर्श हुए। अहिंदी भाषी राज्य हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के पक्ष में नहीं थे। इनमें दक्षिण भारतीय राज्य जैसे तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल आदि प्रमुख हैं। उनका तर्क था कि हिंदी उनकी मातृभाषा नहीं है और यदि इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया तो यह उनके साथ अन्याय होगा। अहिंदी भाषी राज्यों के विरोध और माँग को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने मध्यमार्ग अपनाते हुए हिंदी को राजभाषा का दर्जा तो प्रदान किया पर इसे राष्ट्रभाषा नहीं बनाया। इसके साथ सभी देशवासियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजी को भी राज्यभाषा का दर्जा दिया गया। सन् 1953 में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा ने हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाए जाने का प्रस्ताव दिया। तब से ये दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हिंदी समापन समारोह में निदेशक (सूचना एवं जन सम्पर्क) तथा राजभाषा अधिकारी श्री अजय पाराशर ने विभिन्न प्रतिभागियों के विजेताओं का स्वागत करते हुए उन्हें सफल हिंदी दिवस तथा हिन्दी पखवाड़ा के आयोजन पर बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने उम्मीद व्यक्त की कि सभी उपस्थित कर्मी और अधिकारी अपने जीवन में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए अपने विचारों को उन्नत करने के साथ देश की एकता और अखण्डता को सुदढ़ करने का प्रयास करेंगे ।

हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में हिंदी गीतों पर नृत्य प्रस्तुत किए गए ।

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में अहिंदी भाषी तथा हिंदी भाषी कर्मियों और अधिकारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं में हिंदी अंताक्षरी, हिंदी भाषण, हिंदी समान्य ज्ञान, हिंदी निबंध, हिदी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिताएं शामिल हैं। बाग़वानी सलाहकार मंग्सताबम इबोयमा तथा निदेशक (सूचना एवं जन सम्पर्क) तथा राजभाषा अधिकारी श्री अजय पाराशर ने विभिन्न प्रतिभागियों के विजेताओं को प्रशस्ति-पत्र तथा नक़द ईनाम देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर अन्यों के अतिरिक्त अवर सचिव कुमारी श्रुतिमाला राजबोंग्शी तथा अन्य अधिकारियों ने भाग लिया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम इस प्रकार है :

1. हिंदी अंत्याक्षरी प्रतियोगिता की दोनों प्रतिभागी टीमों को विजेता घोषित किया गया ।

2. हिंदी डिक्टेशन प्रतियोगिता (अहिंदी भाषी) : (1) श्री चंदन जेना : प्रथम, (2) श्री एन कृष्ण सिंह : द्वितीय, और (3) श्री डब्लू इबोनावि सिंह : तृतीय, श्रीमति अनामिका लामा, मिस आरती खारमुजात तथा बेकिर ताशी।

3. हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता : (अहिंदी भाषी) : (1) श्री प्रशांत सोहतुन : प्रथम, (2) श्री राणा वर्मा : दितीय, और (3) मिस बिनता विश्वास : तृतीय।

(हिंदी भाषी) : (1) श्री सुधांशु कुमार : प्रथम, (2) श्री चंदन कु. पंडित : द्वितीय, और (3) श्री आर्यन सिंह : तृतीय।

4. हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता : (हिंदी भाषी) : (1) श्री आर्यन सिंह : प्रथम, (2) श्री मनीष सिंह तथा श्री पुनित चिकारा - द्वितीय और (3) श्री अजय कुमार।

5. हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिता : श्री रजनीश कुमार सिंह : प्रथम, (2) श्री अजय कुमार : द्वितीय और (3) श्री सुधांशु कुमार : तृतीय।

6. हिंदी निबंध प्रतियोगिता : (हिंदी भाषी) : (1) श्री एजाज़ अहमद - प्रथम, (2) श्री उदय कुमार : द्वितीय, और (3) श्री मति पूजा कुमारी तथा श्री आकाश यादव - तृतीय।

(अहिंदी भाषी) : (1) मिस पी पाउमई : प्रथम, (2) श्री रवि कुमार : द्वितीय, (3) मिस अनिशा वालंग, श्रीमति संगीता देवी तथा श्रीमति रिवा लिंदोह : तृतीय।

7. हिंदी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता : हिंदी भाषी : (1) मिस योगिता : प्रथम, (2) श्री अरूण कुमार दिवेदी- द्वितीय और (3) श्री वीर बहादुर राम : तृतीय।

(अहिंदीभाषी) : (1) श्रीमति नियांगजात : प्रथम, (2) श्रीमति बेकिर ताशी : द्वितीय, और (3) श्री चंदन जेना – तृतीय।

8. हिंदी संगीत – (1) मिस नेहा कुशवाहा : प्रथम (2) मिस नेहा लिंदोह : दितीय (3) श्री बेगजोंगवाटी : तृतीय।

9. सांत्वना पुरस्कार : 12 प्रतिभागी।

000